अध्याय - 11

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः अपने दल और पाठ्यक्रम को जो चेले बनाने के लिए है उसे परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	**आराधना** (20 मिनट) ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर मेरा सहायक है**

<u>परिभाषा</u>

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

<u>मनन करनाः</u>

पढ़े या शिक्षा देः परमेश्वर हमारा सहायक है।

पढ़े व्यवस्थाविवरण 1:29-33; इब्रानियों 13:5-6

<u>1. परमेश्वर हमारे शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता करता है।</u>

हर विश्वासी के शत्रु होते हैं।

ये शत्रु कुछ लोग हो सकते हैं जो हमारे यीशु पर विश्वास से घृणा करते हैं। वे दुष्ट आत्माएं हो सकती हैं जिन का लक्ष्य हमारे यीशु पर विश्वास को नष्ट करना होता है। कभी-कभी वे हमारे परिवार के सदस्य भी हो सकते हैं या कलीसिया के वे सदस्य जिन्होंने नया जन्म नहीं लाया है। लेकिन अकसर हमारा सब से बड़ा शत्रु है हमारा पापी स्वभाव जो हमारे अन्दर ही वास करता है।

लेकिन परमेश्वर हम से कहते हैं, **"**मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और मैं तुम्हारी लड़ाई लड़ूँगा।**"**परमेश्वर हमारे लिए कैसे लड़ता है?**"**

कभी-कभी परमेश्वर हमारे शत्रुओं को दूर कर देता है।

पढ़ेः 2 इतिहास 20:12-17, 22-23 वह हमारे लिए लड़ता है और हमें अपनी शक्ति और विजय को देखने देता है।

कभी-कभी हमें अपने शत्रुओं का सामना करना पड़ता हैः

पढ़ेः लूका 6:27-28; 1 पतरस 2:21-23 कई बार परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हम से दूर नहीं करता है क्योंकि वह हमारे शत्रुओ का इस्तेमाल करता है कि हमारे चरित्र को प्रशिक्षण देकर सिखा सके कि हम बुरे लोगों के साथ भी भला करें जिससे उसकी महिमा हो सके। जब हमारे शत्रुओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया परमेश्वर को खुश कर देती है तब वह अकसर हमारे शत्रुओं को हमारे साथ शान्ति से रहने के लिए तैयार कर देता है। (नीति वचन 16:7) अन्य समयों पर परमेश्वर हमें उससे युद्ध करने के लिए आत्मिक शस्त्रों से लैस (तैयार) करता है. इफिसियों 6:10-17 हमें सिखाता है कि हम परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लें जिससे शत्रु के विरोध में खड़े हो सकें।

2. परमेश्वर हमारी परिस्थितों में हमारी मदद करता है

एक सब से मुश्किल चीज़ जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं और रेगिस्तान में रहते हैंजो कि दिन में बहुत गर्म और रात में बहुत ठण्डाहोता है। वहाँ पर पानी, भोजन और घर की सुरक्षा के कोई प्रकृतिक स्रोत नहीं होते हैं। वह हर तरफ से शत्रु के आक्रमण से असुरक्षित होता है। यदि यह लम्बे समय तक अर्थात 40 साल तक हो तो बहुत ही कठिन होता है। यह पुराने नियम में प्रभु के लोगों के साथ हुआ था। परन्तु फिर भी परमेश्वर ने अपने लोगों की एक पिता के समान देखभाल की थी। अन्त तक जब तक कि वे अपनी अन्तिम मंज़िल तक नहीं पहुँच गए थे। अकसर परमेश्वर हमारी कठिन परिस्थितियों को दूर नहीं करता है और हमें उन में से गुज़र जाने देता है। परन्तु ऐसे समय में वह हमें अकेला भी नहीं छोड़ता है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह हमारे आत्मविश्वास की जो घमण्डी आज़ादी है उसे बदलना चाहता है और वह चाहता है कि हम एक स्वस्थ रूप से उस पर निर्भर करना शुरू कर दें। परमेश्वर तो हमें उस कठिन समय से स्वयं उठा कर पार कर देता है। और जब वह हमें उठा कर चलता है तब वह हमें उसी पर भरोसा करना है, उसकी निकटता पर, उसकी बुद्धि और ज्ञान पर, उसकी सामर्थ, उसके उद्धार और उसकी सहायता पर निर्भर करना सिखा देता है।

3. परमेश्वर हमारी यात्रा में हमारी सहायता करता हैः

एक और कठिन कार्य है कि हम किसी अनजानी मंज़ील तक पहुँचने की, किसी अनजाने स्थान की यात्रा कर रहे होते हैं जहाँ हम पहले कभी भी नहीं गए होते हैं। हालाँकि हम अपने विश्वास के कारण जानते हैं कि यह यात्रा हमें कहाँ ले कर जाएगी।लेकिन हम ने अभी तक उस अन्तिम मंज़िल को अनुभव नहीं किया है। अपनी जीवन यात्रा को परमेश्वर के बिना करना ऐसा होगा जैसे कोई जहाज़ बिना कम्पास या बिना पत्वार के चल रहा हो। हमारा जीवन भी परमेश्वर के मार्गदर्शन के बिना नहीं चल पाएगा। परमेश्वर के बिना हम लगातार अपना रास्ता भूल सकते हैं। बिना परमेश्वर के तो हमारे पास ज़रूरी आत्मविश्वास भी नहीं रहता है जो हमें आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता है। बिना परमेश्वर के हम जान नहीं पाएंगे कि कब और कहाँ आराम करना चाहिए।

लेकिन परमेश्वर तो हमारे आगे-आगे चलता है कि हमें राह दिखा सके कि हम आगे चल कर उस स्थान को खोज लें जहाँ हमें विश्राम करना है। अकसर परमेश्वर हमें बहुत पहले से रास्ता नहीं दिखाता है क्योंकि वह हमें अपने मार्दर्शन पर भरोसा करना सिखा रहा होता है जिससे हम अपना हाथ उसके हाथ में दे दें। और उसे ही हर कदम पर हमारी अगुवाई करने दें। (भजन 119:105)

आराधना

परमेश्वर की उसके गुणों के कारण आराधना करें कि वह हमारी मदद करे। तीन-तीन लोगों के दल में आराधना करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **युहन्ना 7:53 - 11:37**

पढ़े और वचन बाँटे, (या आपने जो लिखा है उस में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (युहन्ना 7:35 – 11:37 तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें।
जो भी वचन बाँट रहा है उसे सुने और जो वह कहता है उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें पर उस पर किसी तरह की बहस न करें।

4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***संगति*** **एक दूसरे के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी**

क. मसीही संगति का महत्व

मसीही संगति का रूप और महत्व क्या है?

पढ़ेः युहन्ना 13:34-35

लिख लेः मसीही संगति मूल रूप से एक दूसरे से वैसे ही प्रेम करना है जैसा यीशु मसीह ने हम से किया था।
1. **मसीही संगति एक आज्ञा है।** कोई चुनाव का विकल्प नहीं है।
2. **मसीही संगति एक विरला गुण है।** वह महत्त्वपूर्ण गुण है एक दूसरे से प्रेम करना
3. **मसीही संगति की परिभाषा यह है कि हम एक दूसरे के प्रति कितने ज़िम्मेदार हैं।**
बाइबल के अनुसार हमारी एक दूसरे के प्रति अनेक ज़िम्मेदारियाँ हैं।

ख. मसीही संगति के *विशिष्ट* गुण

1. मसीही संगति का विशेष गुण है परमेश्वर और परमेश्वर के लोगों के बीच का सम्बन्ध

मसीही लोग किस के साथ निकटतम सम्बन्ध रखते हैं?

पढ़ेः 1 युहन्ना 1:3; 1 कुर.1:9; 12:12-13, 25; इफिसियों 2:18; 3:12;इब्रानियों 4:15-16
नोट्सः मसीही लोग पिता परमेश्वर, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा के साथ निकटतम सम्बन्ध रखते हैं और साथ ही मसीही लोगों के समाज में एक दूसरे के साथ भी निकटतम सम्बन्ध रखते हैं जो कि मसीह का बदन है। एक मसीही व्यक्ति जो कि मसीह के बदन का सदस्य है उसे यीशु मसीह से अलग नही किया जा सकता है क्योंकि वह सिर है या मसीही कलीसिया से भी जो कि उसका बदन है।

2. मसीह की संगति उसकी संगत के साथ विशिष्ट सम्बन्ध से जानी जाती है।

मसीही लोग अपनी संगति के समय में क्या करते हैं?
पढ़ेः प्रेरितों के काम 2:42; इफिसियों 5:19
लिख लेः मसीही लोग नियमित रूप से छोटे या बड़े दल में मिलते रहते हैं। अपनी सभा में वे सुसमाचार का प्रचार करते हैं। और बाइबल का अध्ययन के साथ बाइबल की बातों को सिखाते हैं। वे साथ मिल कर आराधना के गीत गाते है और प्रार्थना करते हैं।

3. मसीही संगति की विशेषता उनकी ज़िम्मेदारी के साथ आपसी सम्बन्धों को निभाने से प्रकट होती है।

शिक्षा देः एक दूसरे के प्रति ज़म्मेदारी की शिक्षा दें।

मसीही संगति को समझने का सबसे अचछा तरीका हमें बाइबल के अनुसार एक दूसरे के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझना है। बाइबल के अनेक लेखाँशों में हम इन शब्दों को, **"**एक दूसरे के साथ**"** उदाहरण के लिए, "एक दूसर से प्रेम करो**""**एक दूसरे को शिक्षा दो,**""**एक दूसरे की सेवा करो**"** आदि। यही ज़िम्मेदारियाँ हैं जो हर मसीही को पूरे संसार में दूसरे मसीहों के प्रति निभानी है।

मसीही नियम नहीं।
यह एक बहुत बड़ा प्रलोभन है कि हम इन ज़िम्मेदारियों को मसीह के नियम बना देते हैं। जिन को उठाना बहुत भारी होता है। कोई भी मसीही इन सारी ज़िम्मेदारियों को एक ही समय पर या फिर एक साथ नहीं उठा सकता है। परमेश्वर चाहते हैं कि आप इन ज़िम्मेदारियो को परमेश्वर के मार्गदर्शन के अनुसार पूरा करें। वैसे जैसे वह आपको और आपके जीवन को बढ़ाता है। या उसके अनुग्रह के अनुसार तथा उन वरदानों के अनुसार जो उसने आपके दिए हैं।

सुझावः कोई एक ज़िम्मेदारी चुन ले और उसका कुछ महीनों तक उसका पालन करें।

4. महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारीः

पढ़ेः 1 थिस 3:12 और 1 कुर. 13:4-7
सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी यह है कि हम एक दूसरे से ऐसा प्रेम करें जैसा यीशु मसीह ने हम से किया है।
लागू करने के सम्भव तरीकेः "प्रेम करने**"** का अर्थ है जब कोई व्यक्ति पाप करता है तब
धीरज रखना, या जब कोई व्यक्ति कोई सामाजिक रूप से तिरस्कृत किया जाता है, जब वह असहाय होता है, या जब वह किसी शत्रु के समान व्यवहार करता है तब उसके प्रति दया दिखाना न कि कड़वाहट प्रकट करना। प्रेम करने का अर्थ है किसी व्यक्ति के प्रति जो आप से प्रेम नहीं करता है उसके लिए कुछ सकारात्मक करना है। प्रेम का अर्थ है दूसरे के लिए अपना जीवन बलिदान कर देना। दूसरे व्यक्ति से प्रेम करने का उदाहरण 1 कुर. 13:1-8 में समझाया गया है। मसीही संगति केवल एक आज्ञा ही नहीं है इसे उस पवित्र आत्मा के द्वारा जो आपके अन्दर वास करती है सम्भव किया जा सकता है। (रोमियो 5:5)

ग. मसीहीयों का एक दूसरे के प्रति व्यवहार

1. रोमियो 12:10

ज़िम्मेदारियाः उनकी ज़िम्मेजारी है कि एक दूसरे के प्रति भक्त के समान सच्चे भाइचारे, प्रेम और आदर के साथ एक दूसरे में बने रहें।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः एक भाई के समान प्रेम करने का अर्थ है कि आप एक निकटतम सम्बन्ध बनाए रखें आपका प्रेम और गहरी आत्मिक एकता बनाए रखें जो केवल मसीहों के लिए है।
आदर का अर्थ है दूसरे मसीही लोगों के भले कामों और वचनों के प्रति आदरभाव दिखाना क्योंकि जो कुछ भी उन्होंने किया है उसके लिए उनके इरादे नेक थे और उन्होंने कभी भी कुछ भी बुरे इरादे से नहीं किया है। लेकिन ऐसा केवल तब तक हो सका है जब तक लगातार बुरे इरादे प्रकट न हों। आदर करने का अर्थ है दूसरों के लिए अच्छा बोलना न कि बुरा।

2. रोमियो 13:8-10

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे को चोट न पहुँचाएँ।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः किसी अन्य स्त्री को उसके साथ व्याभिचार करके नुकसान न पहुँचाएँ। इसके स्थान पर पवित्रता को बनाए रखें। शादी की पवित्रता को बनाए रखें। हत्या न करें वरन अपने पड़ोसी को जीवित और स्वस्थ रखने में सहायता करें। चोरी न करें वरन पड़ोसी की चीज़ों की रक्षा करें। दूसरों की चीज़ पर कबज़ा न करें वरन खुश हों कि आपके पड़ोसी के पास उसकी इच्छा की वस्तुएँ हैं।

3. इफिसियों 4:32

ज़िम्मेदारियाःएक दूसरे के प्रति दया भाव रखें। एक दूसरे के प्रति करुणामय स्वभाव रखें। और एक दूसरे को क्षमा करने की भावना को रखें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः दयालु बने रहने का अर्थ है कि हम नम्र और मैत्रीपूर्ण स्वभाव बनाए रखें बजाए इसके कि आलोचक या घृणित स्वभाव का प्रदर्शन करें। इसका अर्थ यह भी है कि हम उन मार्गों की खोज करे और दूसरों की ज़रूरत को पूरा कर दें। करुणामय होने का अर्थ है कि हम दिल से एक दूसरे के प्रति अच्छी भावनाएँ रखें। क्षमावान होने का अर्थ है कि आप कह रहे हैं कि जो अपराध आपने मेरे विरुद्ध किया था आप उसके विषय आप उनके विरुद्ध कोई भावनाएँ नहीं रखते हैं और आप उस पड़ोसी के लिए प्रार्थना करते हैं।

4. कुलु 3:13

ज़िम्मेदारियाः आप सभी तरह की शिकाएतों को जो आपकी किसी दूसरे के प्रति हैं उनको क्षमा कर दें।
लागू करने के सम्भाव तरीकेः आप उसी तरह से क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने आप को किया है। सात गुणा सत्तर बार बिना रुके किया है। अपने पड़ोसी को दिल से क्षमा करें क्योंकि जो कोई ऐसा नहीं करता है उसे परमेश्वर भी क्षमा नहीं करेगा।

5. एक दूसरे की ज़िम्मेदारी के प्रति अपने व्यवहार से आदर करेः

रोमियो 15:1-7 (एक दूसरे को स्वीकार करें) रोमियो 16:16 (एक दूसरे का अभिवादन एक प्रेमी चुम्बन से करो) गलातियों 5:26 (एक दूसरे को डींगे मार के न उकसाओ और न ही एक दूसरे से ईर्ष्या करो) इफिसियो 4:2 (एक दूसरे की सह लो) इफिसियों 5:21(एक दूसरे के प्रति समर्पित हो जाओ) 1 थिसु. 5:13 (एक दूसरे के साथ शान्ति से रहो) 1 थिसु. 5:15 (सदा एक दूसरे के प्रति दयालु रहो) 1 पतरस 5:5-6 (एक दूसरे के लिए स्वयं को नम्रता से ढक लो)

घ. एक दूसरे के प्रति मसीही बातचीत

1. रोमियो 14:13

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे पर न्याय के वचन बोलना बन्द करें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः कमज़ोर लोगों को सामर्थी लोगों की आलोचना करना बन्द कर देना चाहिए और सामर्थी लोगो को कमज़ोर लोगों की गलतियां निकालना बन्द करना चाहिए। मसीहों को या दूसरों को ज़बरदस्ती किसी भी अन्य मसीही को धर्म का पालन आपकी रीति से मानने के लिए नहीं कहना चाहिए। उदाहरण के लिए उन्हें भिन्न दृष्टिकोण को जिसका वे पालन करते हैं उसका आदर करना चाहिए। उदाहरण के लिए कि कौन सा खाना उनके खाने के लिए सही है या कौन से दिन विशेष होने चाहिए। इसे छोड़ कर उनको एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए कि वे प्रभावशाली रीति से मसीह के गवाह बन सकें।

2. कुलुसियों 3:9

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे से झूठ न बोलें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः सच इस रीति से बोलना जिससे दूसरे व्यक्ति का निर्माण हो सके और उसे आपके प्रेम का आश्वसन हो सके। किसी को भी प्रार्थना करने का आश्वासन न दें यदि आप ऐसा नहीं करने वाले हैं।

3. कुलुसियों 3:16

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे को सिखाएँ कि वे कैसे एक दूसरे को डाँट भी सकते हैं।
लागू करने के सम्भव तरीकेः शिक्षा देने की बुलाहट और ड्यूटी केवल पास्टर या अगुवों की ही नहीं होती है। यह बुलाहट कलीसिया के हर एक सदस्य की होती है अर्थात हर मसीही की होती है कि वह एक दूसरे के साथ अपना शान्त समय बिता कर और एक साथ बाइबल अध्ययन करके एक दूसरे को सिखाएँ। गवाहियाँ देकर, शिक्षा देकर और प्रचार करके भी एक दूसरे को सिखाया जा सकता है। डाँटने का अर्थ है एक दूसरे को उनके कमज़ोर क्षेत्र के लिए या जहाँ पर वे असफल हो जाते हैं उसके लिए सलाह देना। इसका अर्थ है कि आप परमेश्वर की शिक्षाओं को और बाइबल की आज्ञाओं को उनके मन पर खोद कर लिख देना है। (वय्वस्थाविवरण 6:6-7)

4. इब्रानियों 10:24-25

ज़िम्मेदारियाः हमें एक दूसरे को प्रेरणा देनी है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें। हमें प्रेरणा देनी है कि भले काम करें। और एक दूसरे को उत्साहित करते रहना है कि वे एक दूसरे से मिलते रहें।
लागू करने के सम्भव तरीकेः प्रेरणा देने का अर्थ है कि एक दूसरे को उकसाते रहें कि वे प्रेम से भरे सम्बन्ध बनाएं और भले काम करें जिससे दूसरों का लाभ हो। उत्साहित करते रहने का अर्थ है एक दूसरे को प्रेरित करना कि वे कम से कम एक मसीही संगति में भाग अवश्य लें। जहाँ पर मसीहो को प्रेम करने और भले काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

5. एक दूसरे की ज़िम्मेदारियो का सम्मान करना और उनके बोलने के विषय में उनका मान रखना।

रोमियो 15:14 (एक दूसरे को सिखाएँ) 1 कुर. 1:10 (एक मन से मिल कर बातचीत करना) इफिसियों 5:19 (गीतों में एक दूसरे से बातचीत करना) याकूब 4:11(एक दूसरे की निन्दा न करना) याकूब 5:9 (एक दूसरे प्रति बुड़बुड़ाना नहीं) याकूब 5:16 (एक दूसरे के सामने अपने पापों को मान लेना)

ङ. एक दूसरे के प्रति मसीही व्यवहार

1. 1 कुर. 12:25

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे के प्रति समान रूप से चिन्ता करना ।
लागू करने के सम्भव तरीकेः परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी योग्यताओं और अवसरों के द्वारा दूसरे मसीहों की सेवा करें।एक ओर हम कमज़ोरों कि सहायता करें और दूसरी ओर शक्तिशाली लोगों को प्रशिक्षण दें। विशेष दल के लोगों के लिए पक्षपात न दिखाएँ।

2. गलातियों 6:2 और 5

ज़िम्मेदारियाः एक दूसरे का बोझ उठा के चलो लेकिन अन्य लोगों के बोझ को उठा कर न चले।
लागू करने के सम्भव तरीकेः यह मसीहों की ज़िम्मेदारी है कि जितना हो सके वे अन्य मसीही का बोझ उठा कर चलें। जो कि उदाहरण के लिए उनकी विपत्तियाँ, उनके संकट, और उनके नुकसान हैं। पर वे उनका सारा बोझ उठाने के

ज़िम्मेदार नहीं हैं क्योंकि वे तो उनके विचारों, व्यवहार, विश्वास, ज़रूरतों, चुनावों, मूल्याँकन और जो वे अपने समय के साथ अपने कौशल के साथ, अपनी चीज़ों के साथ अपने शरीर के साथ व्यवहार करते हैं।

3. 1 पतरस 4:9

ज़िम्मेदारियाः हमें बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का आदर-सत्कार करना है।
लागू करने के सम्भव तरीकेः अन्यस्थान से आए मसीही भाई-बहनों को अपने क्षेत्र में रहने का स्थान और भोजन देना।

4. एक दूसरे की ज़िम्मेदारियो का सम्मान करना और उनके कार्यों का मान रखना।

युहन्ना 13:14 **(**एक दूसरे के पाँव धोना) युहन्ना 15:12 (एक दूसरे से प्रेम करें) गलातियो 5:13 (एक दूसरो की प्रेम के साथ सेवा करना) 1 पतरस 4:10-11 (जो भी वरदान आपको मिला है उससे एक दूसरों की सेवा करें। युहन्ना 1:7 (एक दूसरे के साथ संगति करें)

संक्षेप में - मसीही संगति में शामिल है एक दूसरे के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना, जिस में व्यवहार, दिल और जो भी आप मुख से बोलते हैं या करते हैं भी शामिल है।

च. व्यवहारिक अभ्यास

1.लक्ष्य निर्धारित करें

एक मसीही होने के नाते या एक कलीसिया होने के नाते हमें एक ज़िम्मेदारी को चुन लेना है और उसे एक दल में कार्यरत करना है। व्यक्तिगत रूप से उसे कुछ महीनों तक करना है।

2. नाटक में पात्र को निभाएँ।

अपने दल को 3 या चार लोगों के दल में बाँट लें और एक छोटी सी एक - दो मिनट की नाटिका तैयार करें। और उसे पूरे दल के सदस्यों के सामने एक नाटक के रूप में प्रसतुत करें।

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना**

बारी सेः दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।
या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।
1.समर्पणः समर्पण करें कि आप उन ज़िम्मेदारियों का अभ्यास करेंगे जो हमें एक दूसरे के प्रति निभानी हैं।
2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना 11:38 - 14:31 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपना मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।
3.बाइबल अध्ययनः अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।याकूब 15:1-17 इसका विषय है, "मैं कैसे

फलवन्त बनूँ?”

4. प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. अपनी सप्ताह के नोट्स की कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिक कर पूरे करें।